''धनवाद जिले के विभिन्न विषयों के शिक्षको की अध्यापन अभिक्षमता का अध्ययन''

शोधकर्ता
राजकुमारी एक्का
एम. एड. (छात्रा)

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, समाज की चतुमुर्खी उन्नति और सभ्यता की बहुमुखी प्रगति की आधारशिला है। शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र माना जाता है शिक्षा का प्रकाश व्यक्ति के सब संशयो का उन्मूलन और उनकी सब बाधाओं का निवारण करता है। शिक्षा से प्राप्त अंर्तदृष्टि व्यक्ति की बुद्धि विवेक और कुशलता में वृद्धि करती है। शिक्षा व्यक्ति का वास्तविक शक्ति से संपन्न करती है। उनके सुयश, सुख और समृद्धि में योग देती है, और उसे भवसागर को पार करके मोक्ष प्राप्ति में सहायता देती है।

''शिक्षा अतीत का चित्र प्रस्तुत करने का उत्तम कार्य करती है और इस चित्र को प्रस्तुत करके अतीत को सुरक्षित रखती है। यह वर्तमान समय में भूतकाल की उपलब्धियों की रक्षा करने का उत्तम कार्य करती है। यह ज्ञान और शक्ति के वर्तमान संग्रह में वृद्धि करके भविष्य को भूत से अच्छा बनाने की संभावना का उत्तम कार्य करती है।'' शिक्षा जन्म से मृत्युपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से बालक या व्यक्ति स्वयं को ज्ञान और अनुभव का धनी बनाता है। ज्ञान अनुभव और समायोजन द्वारा वह अपने व्यवहार को परिवर्तित कर समय उपयोगी, शुद्ध और कल्याणकारी बनाता है। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा मानव चेतना का ज्योर्तिमय सांस्कृतिक पक्ष है, जिससे व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है।

''जैसे–जैसे पौधों का विकास खेत की जुताई से होता है, ठीक उसी प्रकार मानव का विकास सुशिक्षा द्वारा होता है।''

अरस्तु ने ठीक ही कहा है कि ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।'' शिक्षा के अभाव में मानव जीवन की कल्पना करना असंभव है। सृष्टि से लेकर अब तक शिक्षा का प्रभाव एवं अस्तित्व भली प्रकार स्वीकार किया जा रहा है। जब तक संसार में मानव का अस्तित्व बना रहेगा, तब तक शिक्षा की प्रक्रिया निरंतर चलती रहेगी। शिक्षा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के (Education) शब्द से हुई। यह शब्द E और DUCO से उत्पन्न हुआ है। इनमें E का अर्थ है from with अंदर से और DUCO का अर्थ जव bring out अर्थात शिक्षा का अर्थ हुआ आंतरिक शक्तियों का विकास।

अध्ययन के उद्देश्य

शोधकार्य एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। इस कार्य द्वारा नवीन सिद्धान्त का प्रतिपादन होता है। शोध के उद्देश्य एक से अधिक हो सकते हैं। समस्या कथन के आधार पर निम्न उद्देश्यों को प्राप्त करने का लक्ष्य है–

1. विज्ञान विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता ज्ञात करना।
2. कला विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता ज्ञात करना।
3. वाणिज्य विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता ज्ञात करना।

परिकल्पना

परिकल्पना के अभाव में अनुसंधानकार्य एक उद्देश्यहीन क्रिया है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और न ही कोई वैज्ञानिक ढंग का अनुसंधान ही संभव है। परिकल्पना अनुसंधान कार्य के लिये मार्ग प्रशस्त करती है। परिकल्पना के निर्धारण से अनुसंधान कार्य विशिष्ट हो जाता है। यह अनुसंधानकर्ता को निश्चित निष्कर्ष पर पहुॅचने में सहायक होती है। विभिन्न अनुसंधानत्मक निष्कर्षो एवं अनुभवों के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन के शोध में निम्न शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण का प्रयास किया जावेगा–

1. विज्ञान विषय तथा कला विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कला विषय तथा वाणिज्य विषय के शिक्षको की अध्यापन अभिक्षमता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. विज्ञान विषय तथा वाणिज्य विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोध झारखंड स्थित धनवाद जिले के कुछ विद्यालयों के शिक्षकों को चयनित किया गया है, जो विभिन्न विषयों के है। कुल 120 विभिन्न विषयों के शिक्षकों का चयन किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 30 विभिन्न विषयों के शिक्षकों का चयन किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध झारखंड स्थित धनवाद जिले के कुछ विद्यालयों के शिक्षकों को चयनित किया गया है, जो विभिन्न विषयों के हैं।

1. मजदूर हाई स्कूल सिंडरी
2. डी.ए. वी स्कूल पाथरडी
3. डी.ए. वी स्कूल पातरा
4. गुजराती हाई स्कूल हरिया

उपकरण : शोध अध्ययन कार्य में न्यादर्श उद्देश्यों एवं परिकल्पना निर्माण के पश्चात् शोधकार्य हेतु प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रयुक्त माध्यम उपकरण कहलाता है। प्रत्येक अनुसंधान कार्य हेतु निश्चित प्रक्रिया एवं साधन की आवश्यकता उपकरण द्वारा पूर्ण होती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में ''अध्यापन–अभिक्षमता'' तथा ''अध्ययन–अभिरूचि'' परीक्षण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

प्रत्येक प्रश्नावली में 50 प्रश्नों की क्रमबद्ध तालिका है, जो शोधार्थी द्वारा प्रशिक्षाणार्थियों को आवश्यक दिशा–निर्देश देकर निश्चित समय सीमा में भरकर उसी समय वापिस ले ली गई।

प्रदत्तों का आरेख चित्र

विज्ञान, वाणिज्य तथा कला विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता के प्राप्तांकों का तुलनात्मक दण्ड आरेख एवं आवृत्ति बहुभुज

स.क्र.	प्राप्तांक	विज्ञान विषय के प्रशि. को सं.	वाणिज्य	कला
1	90–94	0	7	2
2	95–99	0	0	1
3	100–104	1	5	2
4	105–109	2	1	1
5	110–114	3	7	4
6	115–119	7	3	5
7	120–124	13	1	4

8	125–119	3	4	4
9	130–134	0	2	3
10	135–139	1	0	4

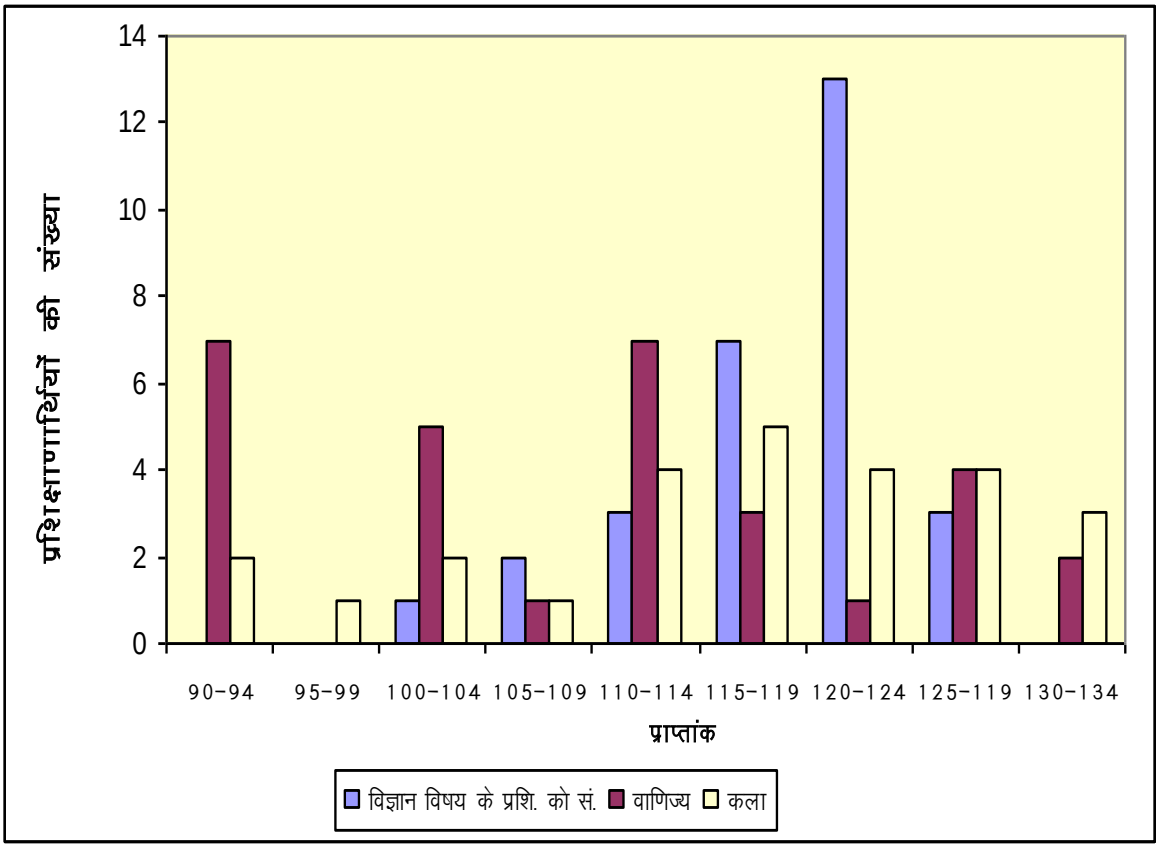

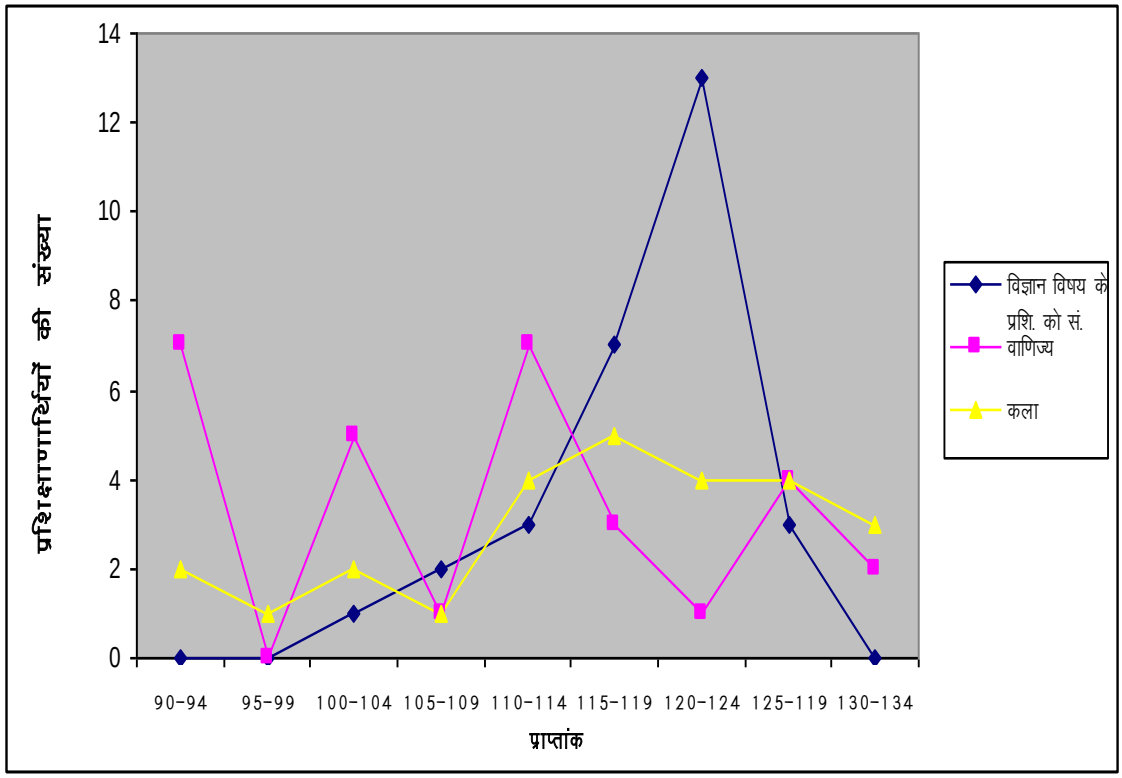

निष्कर्ष

1 विज्ञान एवं कला विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता समान है।

2 कला एवं वाणिज्य विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता प्राप्तांकों की गणना के आधार पर कला विषय का माध्य 116.833 वाणिज्य विषय के माध्यम 109.66 से अधिक है। अतः कला विषय के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता वाणिज्य विषय के अध्यापन अभिक्षमता से अल्पस्तर पर उच्च है।

3 विज्ञान एवं वाणिज्य विषय के शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता के प्राप्तांकों की गणना के आधार पर विज्ञान विषय का माध्य 119.166, वाणिज्य विषय के माध्य 109.66 से अधिक है। अतः विज्ञान विषय के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता, वाणिज्य विषय के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता से अल्पस्तर पर उच्च है।

अध्यापन अभिक्षमता के प्राप्त प्राप्ताकों के सारणीयन विश्लेषण तथा विश्लेषण से किए गए परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त निष्कर्षो से स्पष्ट है, कि मूलतः किसी भी विषय के प्रशिक्षणार्थियों की अध्ययन अभिरूचि में कोई अंतर नहीं पाया जाना, अध्ययन अभिरूचि के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अध्ययन अभिरूचि में कोई अंतर नहीं पाया जाना, अध्ययन अभिरूचि के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की समानता को परिलक्षित करता है। अध्ययन अभिक्षमता में प्राप्त अंतर विज्ञान विषय के प्रशिक्षणार्थियों को अन्य विषय की तुलना में अधिक अध्यापन अभिक्षमता वाला बताता है दूसरे शब्दों में विज्ञान विषय के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता कला एवं वाणिज्य विषय के प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक है।

कला एवं वार्णिज्य विषय के प्रशिक्षणार्थियों की परस्पर तुलना में करने पर, कला संकाय के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता, वार्णिजय विषय के प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक है।

विज्ञान, वाणिज्य एवं कला विषय के प्राप्तांकों के विश्लेषण से अध्ययन अभिरूचि एवं अध्यापन अभिक्षमता में सहसंबंध ज्ञात करने पर हमे निष्कर्ष पर पहुॅचे हैं, कि विज्ञान विषय में प्रशिक्षणार्थियों की अभिरूचि, उनकी अध्यापन अभिक्षमता को कुछ हद तक प्रभावित करती है, जबकि कला एवं वाणिज्य के विद्यार्थियों में ऐसा नहीं होना पाया गया।

सुझाव

वैयक्तिक

- कला एवं वाणिज्य विषय के प्रशिक्षणार्थियों को अपने दायित्व का पूर्ण ईमानदारी से निर्वहन करने एवं शिक्षा के स्तर में गुणात्मक सुधार लाने के लिए अध्यापन अभिक्षमता में वृद्धि के प्रयास करने चाहिए।

- कला एवं वाणिज्य विषय के छात्राओं को विषय जागरूक एवं गतिशील बनाने हेतु संबंधित विषय के प्रशिक्षणार्थियों को अपने विषय अध्ययन रूचि का विकास करना चाहिए।

सैद्धान्तिक

- संबंधित शोध के निष्कर्षो से शिक्षाविदों, प्रशिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यो एवं प्रशासकों को अवगत होना चाहिए।
- अध्यापन अभिक्षमता के प्राप्तांकों के आधार पर अध्यापकों के चयन संबंधी प्रक्रिया में सुधार किया जा सकता है।
- राज्य सरकार इन निष्कर्षो के आधार पर अपनी प्रशिक्षण संबंधी शिक्षा नीतियों को गतिशील एवं उन्नयनशील बना सकते है।
- कला एवं वाणिज्य विषय के छात्राध्यापकों की अभिरूचि एवं अभिक्षमता में नगण्य स्तर के सहसंबंध का कारण ढूंढने का प्रयास किया जावे।
- प्रशिक्षण के दौरान अभिरूचि एवं अभिक्षमता में वृद्धि हेतु क्रियाशील वातावरण उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जावे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भटनागर ए. बी., 2009, भटनागर मीनाश्री ''शिक्षा अनुसंधान''

भाटिया बी.डी., 2006 ''शिक्षण पद्धति एवं सिद्धान्त''

माथुर पी.डी., 2002 ''शिक्षा मनोविज्ञान''

प्रीति वर्मा, 2008 ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी''

पाठक एवं जौहरी, 2009 ''भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएँ''

पाठक पी.डी., 2011 ''शिक्षक के सामान्य सिद्धान्त''